सक्सेस मिरर

सफलता का कैप्सूल

Visit us at : www.pdgroup.in

वर्ष : 13 | अंक : 150 | अक्टूबर : 2022

इस अंक में...

5 सम्पादकीय

7 समसामयिकी घटना संग्रह

9 समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

18 आर्थिक घटना संग्रह

- आरबीआई ने रेपो रेट में 50 आधार अंकों की बढ़ोतरी की
- वंदे भारत ट्रेनों पर ₹ 3,000 करोड़ खर्च करेगी टाटा स्टील
- एलआईसी फॉर्च्यून 500 सूची में शामिल

24 राष्ट्रीय घटना संग्रह

- पीएम मोदी ने लाल किले से देश को किया सम्बोधित
- नीतीश कुमार 8वीं बार बने बिहार के मुख्यमंत्री
- राष्ट्र ने मनाई भारत छोड़ो आंदोलन की 80वीं वर्षगाँठ

28 अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह

- सिंगापुर का पडांग भारत का 75वाँ राष्ट्रीय स्मारक बना
- स्वीडन और फिनलैंड को नाटो में शामिल होने की मंजूरी
- स्कॉटलैंड बना मुफ्त में पीरियड प्रोडक्ट्स देने वाला पहला देश

31 खेल खिलाड़ी

- भारत ने बर्मिंघम कॉमनवेल्थ में 61 पदक अपने नाम किए
- मार्च 2023 में होगा महिला आईपीएल का पहला संस्करण
- टेनिस स्टार सेरेना विलियम्स ने की संन्यास की घोषणा

34 महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

37 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

लेख

40 **वाणिज्यिक लेख**—भारत में फास्ट-मूविंग कंज्यूमर गुड्स क्षेत्र में बढ़ते कदम

41 **जनसंख्या नियंत्रण लेख**—संसाधनों को न निगल जाए बढ़ती आबादी

42 **डिजिटल बैंकिंग लेख**—नियो बैंक : बैंकिंग का नया अनुभव

43 अग्निवीर (भारतीय वायु सेना व नौसेना) भर्ती परीक्षा प्रश्न बैंक

78 **ऐतिहासिक लेख**—अहिंसा को ही हथियार बना लिया था बापू ने

81 **प्रौद्योगिकी लेख**—डिजिटल भारत अभियान की सफलता

82 **ऊर्जा लेख**—भारत की तेल आयात निर्भरता

83 **प्रौद्योगिकी लेख**—ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स

84 **पर्यावरण चिंतन लेख**—धरती पर जीवन के लिए अभिशाप बनता प्लास्टिक

85 **रोजगार लेख**—मधुमक्खी पालन किसानों को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक

87 **स्वरोजगार लेख**—हैंडलूम : सम्भावनाएं एवं रोजगार के अवसर

विविध/सामान्य

108 **वर्षांत समीक्षा 2021**—कोयला मंत्रालय

110 **प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता**

112 **तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-147 का परिणाम**

113 **रोजगार अवसर**

हल प्रश्न-पत्र

88 एस.एस.सी. मल्टी टास्किंग (गैर-तकनीकी) स्टाफ परीक्षा, 2020

मॉडल हल

96 आगामी उत्तर प्रदेश प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा (PET), 2022 हेतु विशेष हल प्रश्न

103 आगामी उत्तराखण्ड पुलिस विभाग के अन्तर्गत आरक्षी संवर्ग के जनपदीय पुलिस, पीएसी/आईआरबी तथा फायरमैन पदों पर सीधी भर्ती परीक्षा, 2022 हेतु विशेष हल प्रश्न

संस्थापक सम्पादक : स्व. श्री महेन्द्र जैन | सम्पादक : राहुल जैन | रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा–2

ई-मेल : सम्पादकीय : publisher@pdgroup.in कस्टमर केयर : care@pdgroup.in

सम्पादकीय ऑफिस	: 1, स्टेट बैंक कॉलोनी, खन्दारी, आगरा-मथुरा बाईपास, **आगरा**–282 005	**फोन**–2531101, 2530966
दिल्ली ऑफिस	: 4845, अंसारी रोड, दरियागंज, **नई दिल्ली**–110 002	**फोन**–011-23251844, 43259035
पटना ऑफिस	: पारस भवन (प्रथम तल), खजांची रोड, **पटना**–800 004	**मो**–09334137572
हैदराबाद ऑफिस	: 16-11-23/37, मूसारामबाग, टीगन गुडा, आर.टी.ए. ऑफिस के सामने मेन रोड, (यूनियन बैंक के बगल में), **हैदराबाद**–500 036 (तेलंगाना)	**मो**–09391487283
हल्द्वानी ऑफिस	: 8-310/1, ए. के. हाउस, हीरानगर, **हल्द्वानी**, जिला–नैनीताल–263 139 (उत्तराखण्ड)	**मो**–07060421008

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे–इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनीकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी **'सक्सेस मिरर'** की नहीं है.

सम्पादकीय

सांस्कृतिक समन्वय के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझिए

> *"Cultural Differences should not separate us from each other, but rather cultural diversity brings a collective strength that can benefit all of humanity."* **—Robert Alan**

अमरीका में रहने वाले विभिन्न जातियों के लोग हैं. वहाँ वैज्ञानिक पद्धति पर इनका हिसाब रखा जाता है, यथा 1/8 काला, 5/8 गोरा, 2/8 मूल रक्तवर्णी अमरीकी आदि के रूप में. भारतवर्ष में अनेक जातियों के, अनेक धर्मों के अवलम्बी लोग विकास करते हैं, परन्तु यहाँ इस प्रकार का हिसाब नहीं रखा जाता है, इस प्रकार का हिसाब रखने की बात न तो कभी किसी के मन में आई और न आती है. इसका कारण है पश्चिम की मिट्टी समझदारी की बात करती है और भारत की मिट्टी समन्वय को आदर्श मानती है.

इस सन्दर्भ में ब्रितानी इतिहासवेत्ता का कथन द्रष्टव्य है ''हम ब्रिटेन निवासियों ने भारत का सब प्रकार से शोषण किया– राजनीतिक शोषण, आर्थिक शोषण, सांस्कृतिक शोषण. भारतीयों ने ब्रिटेनवासियों का पूरा विरोध किया और उनको राजसत्ता से वंचित करके ही चैन लिया, परन्तु भारतीयों ने अंग्रेजों के प्रति मानवीय आत्मीयता नहीं खोई. स्वतन्त्रता संग्राम के कर्णधार महात्मा गांधी सदैव यही कहते थे कि मैं अंग्रेजी राज्य का विरोधी हूँ, अंग्रेजों का नहीं. उनके इस कथन को अनेक व्यक्ति एक बहुत बड़ा राजनीतिक पाखण्ड एवं छद्मधूर्तता का चकमा कह दिया करते थे. स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त भारत के पूर्व वायसराय लॉर्ड माउण्टबेटन को भारत के प्रथम गवर्नर जनरल के पद पर प्रतिष्ठित करके यह प्रमाणित कर दिया गया कि भारतीय संस्कृति पाप से घृणा करना सिखाती है, पापी से नहीं. उसकी दृष्टि में पापी तो सहानुभूति का पात्र होता है. भारतीय इतिहास के अनेक उदाहरण हैं, जो युद्ध में धर्म की विजय का उद्घोष करते हैं. हिन्दुस्तान ने यूरोपीय संस्कृति का सबसे अधिक प्रतिरोध किया है, परन्तु यूरोपीय संस्कृति को सहानुभूतिपूर्वक समझने-समझाने वाले व्यक्तियों की सर्वाधिक संख्या भारत में ही मिलती है. उनका कहना था कि मैं भारत में मान्य अनेक स्थापनाओं से सहमत न होते हुए भी भारत से सीखी हुई एक बात कभी नहीं भूल पाता हूँ कि समझदारी अलग चीज है, समर्पण अलग, समन्वय अलग.''

भारतवर्ष का एक बहुत बड़ा वर्ग पश्चिमी सभ्यता के प्रति समर्पित है. अनिवार्यतः उसका यह तो अर्थ नहीं लगाया जा सकता है कि उक्त वर्ग के लोगों ने पाश्चात्य संस्कृति को समझ लिया है और पूर्णरूपेण उसके प्रति इतने अधिक समर्पित हैं कि अन्य किसी संस्कृति को विशेषकर भारतीय संस्कृति को समझना ही नहीं चाहते हैं. पश्चिम की वेशभूषा अपना लेना, पश्चिम की भाषा अपना लेना एवं सोचने का तरीका अपना लेना पूर्व और पश्चिम का समन्वय नहीं है. बांगडुंग सम्मेलन (1954) द्वारा स्वीकृत तथा विश्व में बहुप्रचलित पंचशील के सिद्धान्तों में सह-अस्तित्व के सिद्धान्त की बहुत दुहाई दी जाती है, परन्तु क्या यह समन्वय का प्रतीक है? यदि Co-existence सह-अस्तित्व के स्थान पर सह-जीवन Co-living होता, तो समन्वय का भाव व्यक्त होता है. सह-अस्तित्व तो शत्रु के साथ भी रहता है, परन्तु क्या वह सद्भावना एवं समन्वय का हेतु कदापि बन सकता है? इसीलिए Co-existence (सह-अस्तित्व) के पहले शांति-पूर्वक (Peaceful) शब्द जोड़ दिया गया है. सह-जीवन में 'शांति' का भाव स्वयं समाहित है.